उषा

प्राक्कथन

महाकवि सुमित्रानंदन पन्त

श्रीगुलाब खंडेलवाल हिन्दी के रससिद्ध कवि हैं । उनकी प्रतिभा तथा प्रसिद्धि के सौरभ से हिन्दी संसार परिचित है । 'उषा' उनका महाकाव्य है जो अपने अनतिदीर्घ कलेवर में मानव-जीवन की व्यापक अनुभूतियों के विश्व को सँजोये है । इस महाकाव्य के कथानक को कवि ने अत्यंत कुशलता से ग्रथित किया है, इसके भीतर प्रणय की विविध दशाओं तथा भंगिमाओं के अतिरिक्त जीवन के उत्थानपतनों तथा भाग्यचक्र के परिवर्तनों के साथ आज के युगसंघर्ष तथा लोक-मूल्य संबंधी समस्याओं को भी स्वस्थ, सबल तथा युगानुरूप अभिव्यक्ति मिल सकी है । इसका कथ्य स्वल्प होते हुए भी इसका चित्रपट इतना व्यापक है कि उसमें राजनीतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक आदि सभी मानव-जीवन के आयामों का सफल चित्रण हो सका है । कथा का प्रत्येक मोड़ अपनी विशेषता लिए हुए उपस्थित होकर नये भाव-क्षितिजों का उद्घाटन करता है, जिससे कवि की मानव-जीवन के गूढ़ विधान में अंतर्दृष्टि तथा मानवस्वभाव की मर्मज्ञता का सहज परिचय मिलता है ।

उषा महाकाव्य में मानवभावनाओं का वैचित्र्यपूर्ण संघर्ष अत्यंत कलात्मक ढंग से रूपायित हुआ है । मुक्तपंख कल्पना तथा गहन गंभीर अनुभूतियों का ऐसा अद्‌भुत परिपाक कम देखने को मिलता है । कवि ने जगत, जीवन तथा ईश्वर संबंधी अपने विचार, पात्रों को जीवन की विविध परिस्थितियों में उलझाकर मार्मिक ढंग से व्यक्त किये हैं । आत्मा, परमात्मा, सृष्टितत्त्व आदि विषयक जटिल दार्शनिक विचारों में कविता के भावस्निग्ध स्पर्श के कारण एक अनुभूति-द्रवित गीतात्मकता आ गयी है । जीवन का ज्ञान-परुष गूढ़ सत्य इस काव्य में रस-तरल होकर हृदय को स्पर्श करने की क्षमता

रखता है। गुलाब की सौंदर्य-दृष्टि तथा काव्यभावना आधुनिक है। उन्होंने काव्य की पंक्ति-पंक्ति में इतने अधिक और उच्चकोटि के कवित्व के उपादान भर दिये हैं कि उनसे सहज ही ऐसे चार और महाकाव्यों का प्रणयन हो सकता है। प्रेम का त्रिकोण चिर-परिचित तथा प्राचीन होने पर भी इसमें नये ही रूप में अवतरित हुआ है। उषा, किरण और राजीव में मानव-मन की भावना, बुद्धि तथा कर्म की प्रवृत्तियों का अत्यंत जीवंत निखार मिलता है। प्रभात भावुकता की सजीव मूर्ति है, उसका आत्मबलिदान उषा का-सा प्रेम की अग्नि में तपा तथा बुद्धि की कसौटी में कसा हुआ नहीं है, वह कोरी भावुकता से प्रेरित है। किशोर भावुकता की पृष्ठभूमि में प्रेम के उदात्त गंभीर रूप का प्रासाद निर्मित करने में कवि को असंदिग्ध सफलता मिली है।

इस महाकाव्य की चरम उपलब्धि उषा के चरित्र में नारी के आत्मत्याग तथा जीवनउत्सर्गपूर्ण मानवीय स्वरूप का विकास है, जिसे देखकर बरबस 'श्रद्धा' की मूर्ति मन में जग उठती है। अन्य अनेक स्थलों पर भी काव्यसौष्ठव तथा भावगरिमा की दृष्टि से कामायनी की याद आती है। यदि मैं इस काव्य के कवित्ववैभव के उदाहरण प्रस्तुत करूँ तो मुझे आधे से अधिक इसके छंदों को उद्धृत करना पड़ेगा। क्या प्रकृतिवर्णन, क्या नाना भावनाओं की सूक्ष्म धूपछाँह का चित्रण, सभी में कवि ने अपनी कला-क्षमता तथा शिल्पबोध से चमत्कार पैदा कर दिया है। मौलिक उपमाओं, उत्प्रेक्षाओं तथा लाक्षनिकता, बिंब-विधान आदि के कारण इस काव्य में छायावाद के सर्वोत्तम उपकरणों का प्रचुर मात्रा में उपयोग हुआ है और उनमें कवि की मौलिक काव्यदृष्टि के कारण नये आयाम उदित हुए है।

एक साधारण प्रणय-कथा को मानव जीवन की सनातन संघर्षशील समस्याओं के परिवेश में अंकित कर गुलाबजी उसे एक चिरंतन सार्थकता तथा शाश्वत रस्मूल्य देने में समर्थ हुए हैं। हृदय बुद्धि के ऊहापोहों तथा जीवन, मरण, सुख, दुःख, संयोग, वियोग, नियति, पुरुषार्थ आदि गंभीर प्रश्नों पर कथा के भीतर कवि-सुलभ

भावनात्मक दृष्टि से चिंतन की अमूल्य वैचारिक निधि बखेर कर कवि की प्रतिभा निश्चय ही उषा को महाकाव्य के स्वर्ण-शिखर पर आरूढ़ कर सकी है।

इस मर्मस्पर्शी काव्य का अंत भी जीवन के अंतराल में विचरण करनेवाली कवि की सूक्ष्म दृष्टि का परिचायक है। नारीत्व के व्यापक पट पर उषा और किरण की भावना का सामंजस्य तथा एकता दिखला कर कवि ने त्याग और भोग को एक ही जीवनसत्य के दो पहलुओं के रूप में अंकित कर विश्वजीवन की परिस्थितियों के वैचित्र्य को नवीन सार्थकता प्रदान की है और परिस्थिति तथा स्वभाव-सीमा-जनित विफलता तथा निराशा में नवीन आशा का प्रकाश उड़ेल दिया है। किरण कहती है ---

मिट सकी तुम्हारी ऊषा !
नित नई विभा धरती है
देखो मेरी आँखों में
बन किरण नृत्य करती है
मेरे मन में उसके ही
मन की धड़कन बजती है
तुम तनिक ध्यान से देखो
ऊषा मुझमें सजती है

कवि गुलाब को मैं उनकी इस रस-सौंदर्य-संतुलित काव्यसृष्टि की सर्वांगीण सफलता के लिए बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि हिन्दी के पाठक इस काव्य-रत्न का मुक्त-हृदय से स्वागत करेंगे और कवि इसी प्रकार माँ भारती के भण्डार को अपनी बहुमूल्य कृतियों की संपदा से भरकर चरितार्थ करता रहेगा।

५-१-६५ सुमित्रानंदन पन्त